अध्याय द्वितीय
सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन

अध्याय–2

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

2.1 पृष्ठभूमि

पीढ़ी–दर–पीढ़ी सदियों से अपने अनुभवों द्वारा एकत्र ज्ञान का समुचित लाभ उठाना मनुष्य की प्रकृति रही है और यही गुण उसकी उत्तरोत्तर उन्नति, नई खोजों एवं अनुसंधानों का कारण है। ज्ञान एकत्र करना, एक–दूसरे तक पहुंचाना तथा ज्ञान में वृद्धि करना यह मानव ज्ञान के तीन पक्ष है। मानव इन्ही पक्षों की पूर्ति के लिए सदैव प्रयत्नशील रहता है तथा समस्याओं का निदान चाहता है। समस्याएं सदा ही समाधान चाहती है और समाधान फिर नई समस्या के रूप में उत्पन्न हो जाता है। तथैव किसी भी कथन या विषय के संबंध में यह कहना कि वह क्षेत्र अभी तक विद्वानों की दृष्टि से अछूता रहा है, अविश्वसनीय सा लगता है।

व्यवहारिक दृष्टि से सम्पूर्ण मानव ज्ञान पुस्तकों एवं पुस्तकालयों से प्राप्त किया जा सकता है। अन्य जीवों के अतिरिक्त जो व्यक्ति पीढ़ी में नये सिरे से प्रारंभ करते है, मानव समाज अपने प्राचीन अनुभवों को संग्रहित एवं सुरक्षित रखता है। ज्ञान के अथाह भण्डार में मानव का निरन्तर योग सभी क्षेत्रों में उसके विकास का आधार है।

2.2 सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन

पूर्व अनुसंधानों की विधिवत् समीक्षा एवं अवलोकन करने की दृष्टि से अनुसंधानों को दो वर्गो में विभक्त किया गया है–

- सामंजस्य से संबंधित अध्ययन।

- शैक्षणिक उपलब्धि से संबंधित अध्ययन।

2.2.1 सामंजस्य से संबंधित अध्ययन

सामंजस्य एवं उसके कारकों का अन्य चरों के साथ पारस्परिक संबंध, प्रभाव आदि से संबंधित मुख्य शोध कार्यो का सारांश निम्नांकित है –

खान, एस.बी. (1969) ने शैक्षणिक उपलब्धि के प्रभावी कारकों का अध्ययन किया। प्रस्तुत शोध में विद्यार्थियों की अभिवृत्ति, शिक्षा पद्धति, समायोजन की आवश्यकता, उपलब्धि की चिंताओं का शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन किया गया। शोध कार्य हेतु 509 छात्र तथा 529 छात्रा का चयन किया गया तथा 122 तथ्यों के आधार पर शोध कार्य किया गया। निष्कर्षतयः विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि पर अभिवृत्ति, शिक्षा पद्धति, समायोजन की आवश्यकता, उपलब्धि की चिंताओं का प्रभाव प्राप्त हुआ। उपर्युक्त सभी कारकों में बालिकाओं का उपलब्धि स्तर, शैक्षणिक उपलब्धि की सोच बालकों की अपेक्षा उच्च प्राप्त हुई।

पण्डित के.एम. (1973) ने प्रतिभाशाली बालकों की समायोजन समस्याओं एवं असंतोष की प्रतिक्रिया का अध्ययन किया। अध्ययन उपरान्त निष्कर्षतयः प्रतिभाशाली बच्चों में कम प्रतिभाशाली बच्चों की अपेक्षा कम समायोजनिक समस्या प्राप्त हुई। दोनों समूहों की बालिका अपने समूह के शेष भाग की अपेक्षा कम समायोजनिक समस्याओं से ग्रसित पायी गयी। प्रतिभाशाली बालिकाएं, बालकों की अपेक्षा केवल सामाजिक समायोजन को छोड़कर शेष सभी क्षेत्रों में सुसमायोजित पाई गई तथा प्रतिभाशाली बालक, बालिकाओं की अपेक्षा अधिक समायोजनिक समस्याओं से ग्रसित पाये गये।

गोस्वामी (1980) ने विद्यालय जाने वाली किशोर बालिकाओं की समायोजन समस्या का अध्ययन किया। निष्कर्षतयः आयु वृद्धि के साथ बालिकाओं में

समायोजन समस्याओं में वृद्धि पायी गयी तथा परिणामों के विश्लेषण के आधार पर यह भी ज्ञात हुआ कि आठवीं तथा नवमीं की बालिकाओं के समायोजन का मध्यमान एवं कक्षा आठवीं और दसवीं की बालिकाओं के समायोजन के मध्यमान के बीच 0.01 स्तर पर अंतर सार्थक प्राप्त हुआ, किन्तु कक्षा नवमी व दसवीं की बालिकाओं के बीच समायोजन का अन्तर सार्थक नहीं प्राप्त हुआ।

लाल के. (1989) ने हरियाणा के विद्यालयों में अध्ययनरत् अनुसूचित जाति की छात्राओं के व्यक्तित्व चरों के आधार पर उनके सामंजस्य में आने वाली कठिनाइयों का अध्ययन किया। प्रस्तुत शोध का उद्देश्य अनुसूचित जाति की बालिकाओं एवं सामान्य जाति की बालिकाओं के सामान्य सामंजस्य और सामान्य बुद्धि लब्धि के अंतर एवं चरों के मध्य संबंध का अध्ययन करना था। न्यादर्श हेतु हरियाणा के उच्च तथा उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत् बालक–बालिकाओं, जिनकी संख्या 560 थी, पर शोध कार्य किया गया। निष्कर्षतयः अनुसूचित जाति के बालक तथा बालिकाओं के व्यक्तित्व कारकों में सार्थक अंतर पाया गया तथा बुद्धि एवं सामंजस्य के मध्य कोई संबंध नहीं प्राप्त हुआ।

सिंह, ऊषा तथा सिंह, आर.के. (1995) ने अभिभावकों के सामाजिक एवं व्यवसायिक कार्य तथा बालकों के घर में सामंजस्य पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया।यह अध्ययन 6–10 वर्ष के प्राथमिक स्तर के 300 बच्चों पर किया गया। निष्कर्षतयः अच्छे व्यवसायिक स्तर वाले अभिभावकों के बच्चों का घर में सामंजस्य, निम्न व्यवसायिक स्तर के अभिभावकों के बच्चों से उच्च प्राप्त हुआ तथा अभिभावकों के व्यवसाय के प्रकार का बच्चों के घर में सामंजस्य पर सार्थक प्रभाव प्राप्त हुआ एवम् अभिभावकों की सामाजिक गतिविधियों का भी बच्चों के घर में सामंजस्य स्तर पर सार्थक प्रभाव प्राप्त हुआ।

हुसैन, प्रो.ए. बी.एम. अख्तर (2004) ने विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण एवं बुद्धिमता का घर में सामंजस्य पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया। शोध कार्य हेतु ढाका (बांग्लादेश) के चार अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों से 64 छात्रों का चयन किया। निष्कर्षतः विद्यार्थियों के घर के वातावरण तथा घर में सामंजस्य के मध्य सार्थक संबंध पाया गया तथा उच्च बुद्धि के छात्रों का घर में सामंजस्य, निम्नबुद्धि छात्रों की अपेक्षा उच्च पाया गया।

शालु और आदित्य, एस. (2006) ने ग्रामीण क्षेत्र में अध्ययनरत् किशोर अवस्था के बालक एवं बालिकाओं के विद्यालय सामंजस्य (कारक–सामाजिक, भावनात्मक, शैक्षिक) का तुलनात्मक अध्ययन किया। शोध कार्य में शासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत् 14–16 वर्ष के आठवी से दसवी तक के 30 बालक एवं 30 बालिकाओं को सम्मिलित किया गया। सामंजस्य स्तर का मापन करने हेतु सिन्हा व सिंह के द्वारा निर्मित सामंजस्य मापनी का प्रयोग किया गया। जिसे शोधकर्ताओं द्वारा रूपांतरित करके प्रयोग किया गया। निष्कर्षतयः बालक तथा बालिकाओं का विद्यालय में भावनात्मक सामंजस्य में सार्थक अंतर प्राप्त हुआ। जबकि सामाजिक एवं शैक्षिक स्तर पर सार्थक अंतर प्राप्त नहीं हुआ।

मोनिका मोहन, कुलश्रेष्ठ, ऊषा एवं तिवारी, मनीषा (2006) ने छात्रावासी एवं गैर-छात्रावासी छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य एवं सामंजस्य का अध्ययन किया। शोध कार्य में न्यादर्श हेतु स्नातक स्तर की 50 छात्रावासी एवं 50 गैर-छात्रावासी छात्राओं को सम्मिलित किया। जगदीश और श्रीवास्तव द्वारा निर्मित मानसिक स्वास्थ्य मापनी तथा सिन्हा एवं सिंह द्वारा निर्मित सामंजस्य मापनी का उपयोग किया गया। निष्कर्षतयः छात्रावासी एवं गैर-छात्रावासी छात्राओं के घर, स्वास्थ्य एवं सामाजिक कारकों के मध्य सार्थक अंतर प्राप्त नहीं हुआ। जबकि उनके मानसिक स्वास्थ्य के विभिन्न आयामों में सार्थक अंतर प्राप्त हुआ।

2.2.2 शैक्षणिक उपलब्धि से संबंधित अध्ययन

नायर ऊषा, जोगलेकर के.सी. (1992) ने बालिकाओं की प्रारंभिक शिक्षा में निरन्तरता एवं अनिरन्तरता (अवरोध) के तथ्यों का अध्ययन किया। प्रस्तुत शोध के उद्देश्य प्रारंभिक शिक्षा से बालिकाओं के अलगाव, शालात्यागी, अनिरन्तता होने के कारणों की पहचान करना। 6 से 14 आयु वर्ग की बालिकाओं के शाला अप्रवेशी होने के कारण की पहचान करना। बालिकाओं की शिक्षा को लोकव्यापी करने हेतु व्यूह रचना तैयार करना, का आंकलन किया गया। निष्कर्षतयः पालकों की अच्छी आर्थिक स्थिति, बालिकाओं की शिक्षा, अभिप्रेरण एवं परिवार का शिक्षा के प्रति सहयोगात्मक दृष्टिकोण विद्यार्थियों में निरन्तरता लाता है, घरेलू कार्य व छोटे भाई बहनों की देखभाल, कम उम्र के विवाह, गरीबी, लिंगभेद, पर्दा प्रथा आदि बालिका के शाला त्यागी होने के प्रमुख कारण है, लिंग भेद के कारण सामान्यतः बालक–बालिकाओं को शिक्षा व कार्यो से बालक की तुलना में कम महत्व दिया जाता है तथा बालिकाओं के अप्रवेशी होने का प्रमुख कारण लिंग भेद, सामाजिक मान्यता एवं शाला का निवास से दूर होना भी है, प्राप्त हुए।

जैन, रूपम (1996) ने प्राथमिक स्तर के आदिवासी तथा गैर-आदिवासी क्षेत्र के विद्यार्थी की शैक्षणिक उपलब्धि का अध्ययन किया। न्यादर्श हेतु 206 विद्यार्थियों को चयन किया गया। विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि के मापन हेतु स्व–निर्मित उपलब्धि परीक्षण का निर्माण किया जो विद्यार्थियों की उपलब्धि स्तर के अनुरूप थी। निष्कर्षतयः बालकों की अपेक्षा बालिकाओं ने अधिक अंक प्राप्त किये। आदिवासी क्षेत्र के विद्यार्थियों की उपलब्धि गैर-आदिवासी विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च प्राप्त हुई तथा माता-पिता के व्यवसाय का विद्यार्थियों के उपलब्धि स्तर पर कोई प्रभाव नहीं प्राप्त हुआ।

शुक्ल, एस.के. अग्रवाल (1997) ने अनुसूचित जाति एवं गैर-अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति, बुद्धि–लब्धि का अध्ययन किया। निष्कर्षतयः अनुसूचित जाति का सामाजिक–आर्थिक स्तर, गैर-अनुसूचित जाति से कम प्राप्त हुआ। अनुसूचित जाति की शैक्षणिक उपलब्धि, गैर-अनुसूचित जाति से कम प्राप्त हुई तथा अनुसूचित जाति तथा गैर-अनुसूचित जाति की बालिकाओं की शैक्षणिक उपलब्धि बालकों की अपेक्षा उच्च पायी गयी।

बागड़े, उमेश तुकारामजी (2003) ने चंद्रपुर जिले के आदिवासी आश्रम–शाला एवं जिला परिषद् शालाओं के आदिवासी छात्र–छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन किया। निष्कर्षतयः आदिवासी आश्रम शालाओं के छात्र–छात्राओं एवं जिला परिषद् शालाओं के आदिवासी छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है, प्राप्त हुआ।

2.3 संबंधित साहित्य के पुनरावलोकन से प्राप्त निष्कर्ष

सामंजस्य तथा शैक्षणिक उपलब्धि से सम्बन्धित पूर्व अध्ययनों के पुनरावलोकन से निष्कर्षतः प्राप्त हुआ कि

- ❖ बालिकाओं की शैक्षणिक उपलब्धि पर सामंजस्य कारकों का प्रभाव पड़ता है।
- ❖ अभिभावकों के व्यवसाय का बालिकाओं के गृह समायोजन पर प्रभाव पड़ता है।
- ❖ बालिकाओं के सीखने पर उनके घर की पृष्ठभूमि, सामाजिक कारक, पारंपरिक कारणों आदि का धनात्मक प्रभाव पड़ता है।
- ❖ बालिकाओं को प्रदान की जाने वाली सुविधाओं का प्रभाव उनकी शैक्षणिक उपलब्धि पर दृष्टिगोचर होता है।

यह सभी कारण बालिकाओं के अनामांकित होने हेतु प्रभावी रहते हैं फलतः बालिकाएं शाला त्याग कर गृह कार्य में सहयोग देती है जो कि शैक्षिक स्तर को निम्नतम करता जाता है।